इंफो इंडिया

पोर्ट ब्लेयर, मंगलवार 6 सितम्बर, 2022, Phone : (03192) 230269/230230 Fax : (03192) 234325, E-mail : infoindiahir

आईसीएआर-सीआईएआरआई ने पांडनस जीन बैंक की स्थापना की

पोर्ट ब्लेयर, 5 सितंबर। आईसीएआर-सीआईएआरआई ने एकत्र किए गए पांडनस की विभिन्न प्रजातियों के संरक्षण, मूल्यांकन और उपयोग के लिए राष्ट्रीय औराधीय पादप बोर्ड, नई दिल्ली द्वारा वित्त पोरित परियोजना के तहत सोमवार को अपने गारचर्मा अनुसंधान फार्म में एक पांडनस जीन बैंक की स्थापना की है। अंडमान और निकोबार के विभिन्न हिस्सों से। इस संबंध में विभिन्न प्रजातियों के 175 पौध अर्थात. क्रात्र परिसर में 2.00 एकड़ सीढ़ीदार भूमि में पांडनसलेरम, पांडनस्टेक्टोरियस, पांडनुसोडोरिफर और पांडनुसमेरीलिफोलियस लगाए गए थे। विश्व नारियल दिवस समारोह के हिस्से के रूप में, सीआईएआरआई की पांच जारी नारियल किस्मों के तीस पौधे अर्थात। फील्ड जीन बैंक में द्वीप हरिथा, द्वीप सोना, सीआईएआरआई चंदन, सीआईएआरआई सूर्या और सीआईएआरआई अन्नपूर्णा को भी लगाया गया। डॉ. ई.बी. चाकुरकर, निदेशक, सीआईएआरआई ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की और रोपण समारोह का उद्घाटन किया जिसमें संस्थान के सभी वैज्ञानिकों ने भाग लिया। डॉ. आई. जयशंकर, वरिरुठ वैज्ञानिक और कार्यक्रम के समन्वयक ने सभा का स्वागत किया और सीआईएआरआई में पांडनस पर शोध की पृरुठभूमि के बारे में जानकारी दी और जीन बैंक के लिए रोपण सामग्री प्रदान की। डॉ. बी.ए. जेराई, प्रमुख, बागवानी और वानिकी विभाग और कार्यक्रम के संयोजक ने वैश्विक परिदृश्य, अंडमान और निकोबार द्वीप समूह की आदिवासी जनजातियों की आजीविका में पांडनस के पेड़ों के ऐतिहासिक महत्व को विस्तार से बताया, जो स्टार्च युक्त फलों को भोजन के रूप में, पत्तियों को सेलक्लोथ के रूप में इस्तेमाल करते थे। चटाई और रस्सी। इसके अलावा, जीनस पांडनस की लगभग 1,000 प्रजातियां हैं जो समुद्र तल से विभिन्न पर्यावरणीय परिस्थितियों में समुद्र तल से 11,000 फीट तक बढ़ सकती हैं। उन्होंने यह भी बताया कि नारियल खाद्य तेल का एकमात्र मूल स्रोत है, जबकि अन्य प्रमुख तिलहन फसलें विदेशी मूल की हैं और देश के अन्य देशों से खाद्य तेल के आयात पर बोझ को कम करने के लिए हमारे आहार में नारियल तेल के उपयोग को बढ़ाने का आह्वान किया। डॉ. ए. वेलमुरुगन, प्रमुख, प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन विभाग, डॉ. एस.के. जमीर अहमद, सामाजिक विज्ञान अनुभाग और डॉ. बी. भास्करन, प्रधान वैज्ञानिक ने वैज्ञानिक टीम को इसके प्रयासों के लिए सम्मानित किया। बाद में सभी प्रतिभागियों ने जीन बैंक में कुलीन नारियल और पैंडनस के पौधे रोपे। डॉ. बी. दामोदरन, एसीटीओ ने धन्यवाद प्रस्ताव रखा।